13

धीमे विचार

दुनिया में रोज़ ही कई नवाचार होते हैं। कुछ नवाचार बहुत तेज़ी से फैलते हैं जबकि कुछ को मान्यता मिलने में समय लगता है। हम पाते हैं कि कुछ जल्द ही लोगों द्वारा अपना लिए जाते हैं और सामान्य चलन में आ जाते हैं जबकि कुछ अन्य नवाचारों को यहाँ तक पहुँचने में काफी वक्त लग जाता है। आखिर वो क्या विशेषताएँ हो सकती हैं जो किसी विचार को इस तेज़ी से जनसामान्य तक पहुँचाने में मदद करती होंगी? इसके पीछे के क्या-क्या कारक हो सकते हैं इसकी पड़ताल करता जनस्वास्थ्य पर काम करने वाले प्रख्यात चिकित्सक अतुल गवंडे का लेख पढ़िए पेज 13 पर।

शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा का सर्वव्यापीकरण हुआ है। प्राथमिक शिक्षा को मुफ्त और अनिवार्य बना देने से ऐसा लगता है कि अब लगभग सभी बच्चे स्कूल पहुँच जाएँगे और काफी हद तक ऐसा हो भी रहा है। परन्तु शिक्षा के अनेक स्तर हैं और हर कोई शिक्षा के अपने मायने और उद्देश्य तय करता है। अब तक हाशिए में अपना जीवन जी रहे बस्ती के लोग भी अपने बच्चों को स्कूल तक पहुँचा रहे हैं, बड़ी उम्मीदों के साथ। उनका उद्देश्य बच्चों को खुद से बेहतर स्थिति में पहुँचाना है। पर क्या वास्तव में स्कूल ऐसी जगह है जहाँ से ऐसी उम्मीदें लगाई जा सकती हैं? शिक्षा का वर्तमान स्वरूप और पाठ्यक्रम किसके लिए है? हाशिए पर रह रहे लोगों के लिए शिक्षा के मायने जानने के लिए मुस्कान संस्था द्वारा भोपाल की बस्तियों में किए गए एक सर्वे पर आधारित लेख पढ़िए पेज 61 पर।

61

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-34 (मूल अंक-91), मार्च-अप्रैल 2014

इस अंक में

4 | **आपने लिखा**

5 | **परमाणु संरचना की कथा - भाग 1**
सुशील जोशी

13 | **धीमे विचार - भाग 1**
अतुल गवंडे

25 | **जीवन स्पर्धा, और... पक्षियों में... - भाग 2**
ऐड्रियन फोर्सिथ और कैन मियाटा

37 | **बल, चल, हल...**
रमाकान्त अग्निहोत्री

43 | **पतियोगिता और प्रतियोगिता**
श्रीदेवी

47 | **अन्तरिक्ष में स्पेस-सूट न पहना जाए तो...?**
सवालीराम

51 | **स्थान-आधारित शिक्षा**
तेजस्वी शिवानन्द

61 | **शिक्षा का उद्देश्य**
शिवानी तनेजा

75 | **पहाड़, जिसे एक चिड़िया से प्यार हुआ**
कमलेश चन्द्र जोशी

81 | **जंगली बूटी**
अमृता प्रीतम

89 | **वर्णान्धता**
अम्बरीष सोनी